251वें तेरापंथ स्थापना दिवस पर त्रिदिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ

आचार्य भिक्षु की आध्यात्म निष्ठा जीवन में उतारें – आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 23 जुलाई, 2010

आज के दिन क्रांत दृष्टा व्यक्तितव की आत्मा के बाह्य जगत में प्रकटीकरण किया। जन्म लेना कोई विशेषता नहीं है, सभी सभी लेते हैं, मैं जन्म दिवस को इतना महत्त्व नहीं देता, परन्तु जो दीक्षा लेता है वह विशेष पुरुषार्थ है। आचार्य भिक्षु का जन्म दिवस का महत्त्व इसलिए है कि बड़ों के साथ जुड़ने पर महत्त्वहीन दिन भी महत्त्वपूर्ण बन जाता है। आचार्य भिक्षु एक दिव्य पुरुष थे महापुरुष थे। उन्होंने आज के ही दिन एक दिव्य दृष्टि पाई, बोधि प्राप्त किया। इस बोधि की प्राप्ति में ज्वर का योग मिला। जीवन में आने वाली कठिनाइयों से जीवन को नई दिशा मिल जाती है, वैसे ही आचार्य भिक्षु के चिंतन को नया मोड़ देने में ज्वर की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही।

उक्त विचार आचार्य महाश्रमण ने नवनिर्मित तेरापंथ भवन के सभागार में 251वें तेरापंथ स्थापना दिवस पर आयोजित त्रिदिवसीय कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर व्यक्त किये। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति के द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में उपस्थित विशाल जनमेदनी को संबोधित करते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु ने कंटिकापूर्ण पथ अपनाया। इस पथ पर बढ़ते हुए अनेक कांटे चुभे पर उन्होंने उनको सहन किया और कुद कांटों को निकाला भी। ऐसा आत्मबल किसी दिव्य पुरुष में ही हो सकता है। आचार्य भिक्षु द्वारा प्रदत्त अनुकंपा दर्शन की चर्चा करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा कि आचार्य भिक्षु को समझने के लिए उनके जीवन के साथ दर्शन को भी पढ़ना जरूरी है। जिसमें अनुकंपा चेतना जाग जाती है वह पाप से बच जाता है। उन्होंने आचार्य भिक्षु को आत्मार्थी बतात हुए उनकी आध्यात्म निष्ठा एवं आचार निष्ठा को जीवन में उतारने की प्रेरणा दी।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि आचार्य भिक्षु वचन से ही विलक्षण बुद्धि के धनी थे। उन्होंने अपने गतिशील चिंतन से रूढ़िवाद पर प्रहार किया। साध्वी प्रमुखा ने आचार्य भिक्षु के श्रमशील, धृतिसंपन्न एवं दृढ़ मनोबली बताया। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने कहा कि भिक्षु स्वामी का व्यक्तित्व बहु आयामी था। वे चिंतनशील, दार्शनिक, कवि, उच्चकोटि के लेखक, साहित्यकार थे। वे अध्यात्म के सागर में डुबकियां लगाते रहते थे। अणुव्रत प्रभारी मुनिसुखलाल ने भिक्षु वांग्मय में संदर्भ में कहा कि आचार्य महाश्रमण के निर्देशन में बहुत जल्द हिन्दी अनुवाद के साथ भिक्षुवांग्मय का सम्पादित रूप सामने आयेगा। उल्लेखनीय है कि इस संपादन में मुनि सुखलाल एवं मुनि कीर्तिकुमार का योगदान रहा है।

आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा संस्कृत में रचित भिक्षु अष्टकम के समणीवृंद द्वारा संगान के साथ प्रारंभ हुए कार्यक्रम में साध्वी विशालप्रभा, साध्वी स्वष्तिकप्रभा ने अपने विचार रखे।

स्कूलों में जीवन विज्ञान की धूम

इन दिनों सरदारशहर के विद्यालयों में आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा शिक्षा जगत को प्रदत विशेष अवधान जीवन विज्ञान की धूम है। आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में एवं मुनि किशनलाल के निर्देशन में विद्यालयों में जीवन विज्ञान के विशेष प्रयोग करवाये जा रहे हैं। आज तरापथ भवन मं दगड विद्यालय क सकडां विद्याथिंयां का संबाधित करत हुए आचायं महाश्रमण न इंमानदारो, पामाणिकता, नतिकता क संस्कारां का विकसित करन को परणा दो। मुनि किशनलाल न तरापंथ भवन मं विद्याथिंयां का सवांगोण विकास क लिए महापाण ध्वनि क अलावा जोवन विज्ञान क विशष पयाग करवाय।

आज हागा चातुमांस पारंभ

आज सायं चातुमांस पक्खो क पतिकमण क साथ आचायं महाश्रमण चातुमांस का शुभारंभ करंग। इसस पवं पातः चातुमांसिक चतुदशो पर विशष तार पर कायंकम आयाजित हागा उक्त जानकारो दत हुए आचायं महापज्ञ चातुमांस व्यवस्था समिति क अध्यक्ष सुमतिचन्द गाठो न बताया कि 25 जुलाइं का पातः 8.30 बज 251वं तरापंथ स्थापना दिवस पर तरापंथ भवन मं दोक्षा समाराह आयाजित हागा। इस समाराह मं आचायं महाश्रमण श्रणो आराहण करत हुए समणो विनम्रप्रज्ञा, समणी आदर्शप्रज्ञा, समणी ऋषिप्रज्ञा, समणी मौलिकप्रज्ञा, समणी रविप्रज्ञा, समणी दिव्यप्रज्ञा, समणी प्रशमप्रज्ञा को साध्वी दीक्षा प्रदान करेंगे। इस माक पर हजारां को भोड जुटगो।